अध्याय तेरह

अन्य विभाग

जिले के कुछ ऐसे महत्वपूर्ण विभागों (जिनका उल्लेख अध्याय 10 और 12 में नहीं किया गया है), जिनका संबंध जिले की अर्थव्यवस्था और दीर्घकालिक नियोजन से है तथा जिनके जिला स्तरीय अधिकारी अन्तरिम परिषद् के सदस्य हैं, जिन्हें तत्कालीन जिला नियोजन समिति के कार्य हस्तान्तरित कर दिए गए हैं, का संगठनात्मक ढांचा, निम्नलिखित है :--

सार्वजनिक निर्माण विभाग--सीतापुर, सार्वजनिक निर्माण विभाग के सीतापुर प्रान्तीय प्रभाग का मुख्यालय है, जिसके अन्तर्गत सीतापुर, हरदोई और शाहजहांपुर के जिले आते हैं और यह एक अधिशासी अभियन्ता के प्रभार में है जो प्रशासन के सभी विभागों और अपने प्रभार की सीमाओं के भीतर अन्तरिम जिला परिषदों का पदेन व्यावसायिक (Professional) सलाहकार होता है। सीतापुर जिले के कार्य की देख-रेख दो (और कभी-कभी तीन) सहायक अभियन्ताओं द्वारा की जाती है, जो उसके अधीनस्थ होते हैं।

यह विभाग सरकारी भवनों, सड़कों, बांधों, पुलों और पुलियों के निर्माण, अनुरक्षण और मरम्मत का कार्य करता है। हाल ही के वर्षों में किया गया एक महत्वपूर्ण कार्य लखनऊ-बरेली मार्ग के चौवनवें मील पर सरायन नदी पर सीमेन्ट और कंक्रीट के एक पुल का निर्माण है। पूरा बन जाने पर यह पुल, लटठों के वर्तमान पुल का स्थान ले लेगा।

कृषि विभाग--जिले के कृषि विकास के कार्य की देखभाल जिला कृषि अधिकारी द्वारा की जाती है, जिस की सहायता के लिये एक अतिरिक्त जिला कृषि अधिकारी होता है। इन अधिकारियों के अधीन चार कृषि निरीक्षक, एक तिलहन प्रसार निरीक्षक, एक जूट-विकास निरीक्षक, एक उद्यान निरीक्षक, तीन कम्पोस्ट निरीक्षक और एक पौध संरक्षण सहायक होते हैं।

तेइस सहायक कृषि निरीक्षकों की सहायता से चार कृषि निरीक्षक, संपूर्ण कृषि संबंधी विकास कार्यक्रम और उसके निष्पादन की देखभाल करते हैं; तेइस सहायक कृषि निरीक्षकों में से उन्नीस के प्रभार में विभाग द्वारा अनुरक्षित बीज भण्डार हैं और अन्य चार उन्नत-बीजों के प्रदर्शन और उन्नत कृषि पद्धतियों की देखभाल करते हैं। इन निरीक्षकों के अधीन बयालिस कामदार कार्य करते हैं।

लालपुर, जयपारपुर, जलालपुर, बलोइया और रामकोट प्रत्येक में एक के हिसाब से कुल पांच कृषि प्रदर्शन एवं बहुफसली कृषि-क्षेत्र हैं जो जिला कृषि अधिकारी तथा अतिरिक्त जिला कृषि अधिकारी के पर्यवेक्षण के अधीन कृषि क्षेत्र अधीक्षकों द्वारा चलाए जाते हैं। इन कृषि क्षेत्रों पर चौदह हलवाहे काम करते हैं जिन्हें मासिक आधार पर वेतन दिया जाता है। जयपारपुर में एक सरकारी पौधशाला भी है।

चूंकि सीतापुर में तिलहन की खेती पर्याप्त बड़े क्षेत्र में होती है, अतः ऐसी फसलों की खेती में सुधार संबंधी योजनाओं के कार्यान्वयन का पर्यवेक्षण करने के लिये एक तिलहन-प्रसार निरीक्षक की नियुक्ति की गई है। उसकी सहायता के लिये दो पर्यवेक्षक हैं।

जूट जिसमें पटुआ (hemp) भी सम्मिलित है जिले की एक बहुत महत्वपूर्ण नकदी फसल है, जिसके अन्तर्गत लगभग 13,034 एकड़ भूमि आ जाती है और उसकी बिक्री भी तत्काल हो जाती है। जूट-विकास निरीक्षक, सात सहायक जूट-विकास निरीक्षकों और पच्चीस कामदारों की सहायता से जिले में जूट की खेती संबंधी विकास योजनाओं के कार्यान्वयन की देख-रेख करता है।

औद्यानिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन हेतु, इस समय एक उद्यान-निरीक्षक है जिसकी सहायता के लिये एक सहायक उद्यान-निरीक्षक, एक प्रधान माली और दो माली हैं।

जिले में एक पौध-संरक्षण केन्द्र खोला गया है जो एक कनिष्ठ पौध-संरक्षण सहायक के प्रभार में है, जिसकी सहायता के लिये एक पौध-संरक्षण पर्यवेक्षक और दो क्षेत्र-परिचर हैं। वे जिले में पौध-संरक्षण कार्य की देख-रेख करते हैं।